ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 181-186

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

वर्तमान परिवेश में उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष चुनौतियां का समीक्षात्मक एक अध्ययन

मनीष मोदनवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर– शिक्षा शास्त्र विभाग, एस एल बी एस डिग्री कॉलेज, गोण्डा (उ0प्र0), भारत

Received-12.06.2024, Revised-21.06.2024, Accepted-27.06.2024 E-mail: manish.modanwal9898@gmail.com

साराश: प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक, परा स्नातक व पीएचडी पाठ्यक्रम की महिला छात्राओं को लेकर किया गया है। जिसमे उनको उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करने वाले कारकों की पहचान करके उनको प्रोत्साहन देना तथा उनके समक्ष उच्च शिक्षा से सम्बन्धित क्या चुनौतियां हैं उनका अध्ययन करना आदि सम्मिलित है। इसके लिए लखनऊ विश्वविद्यालय की 100 महिला छात्राओं का उद्देश्यपूर्ण निर्दशन के माध्यम से चयन किया गया तथा गूगल फॉर्म की सहायता से तथ्यों को संकलित किया गया। स्त्री शिक्षा स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से सम्बन्धित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को सन्दर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानो का कदापि कल्याण नहीं हो सकता। शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक आध ाार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बहुत सी समस्याओं को पुरुषों से नहीं कह सकने के कारण महिलाएँ कठिनाई का सामना करती रहती हैं। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है।

कुंजीभूत शब्द– महिला छात्रा, उच्च शिक्षा, लखनऊ विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा को प्रेरित करने वाले कारक, चुनौतियाँ।

महिला शिक्षा का परिचय– किसी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण कुंजी माना जाता है। महिलाओं के जीवन में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा महिलाओं को समाज में कई भूमिकाएँ निभाने में मदद करती है और उन्हें बदलाव लाने और समाज के उत्थान में मदद करती है। शिक्षित महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा सकती हैं और एक अच्छी निर्णय निर्माता बन सकती हैं (आचार्य एवं अन्य, 2010)। उच्च शिक्षा महिलाओं को समाज में कई आधुनिक भूमिकाएँ निभाने के लिए आवश्यक ज्ञान और विशेषज्ञता से सुसज्जित करती है (शबरीन, 2015)। शिक्षा महिलाओं के लिए अपने अंदर और खुद में बदलाव लाने का एक शक्तिशाली साधन है, जो उन्हें समाज में बेहतर स्थिति हासिल करने, स्वस्थ्य और सफल जीवन जीने की ओर ले जाती है। यह महिलाओं को अन्य महिलाओं में बदलाव लाने और पुरुषों के मुकाबले समाज में अपना स्थान बढ़ाने और पुरुषों पर उनकी निर्भरता को कम करने में भी सक्षम बनाता है। महिलाओं की उच्च शिक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज और राष्ट्र की प्रगति को गति देती है। उच्च शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आत्म–सम्मान बढ़ाती है (डे एंड हलदर, 2014)। यह महिलाओं को अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में सक्षम बनाता है, जिसे महिलाओं की अशिक्षा के कारकों में से एक माना जाता है। इसके अलावा, महिलाओं की उच्च शिक्षा आर्थिक स्वतंत्रता की ओर ले जाती है (शर्मा, 1995)। महिलाओं पर उच्च शिक्षा का प्रभाव किसी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन को बदलने में मदद करता है। आज की दुनिया में भी, महिलाओं को दैनिक जीवन में कई समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैय चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो, राजनीतिक हो या शैक्षणिक। इसका कारण यह हो सकता है कि महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हैं, जिसके कारण वे चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ हो जाती हैं और उन्हें परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो महिलाओं को उनके अधिकारों का एहसास करने और सामाजिक अन्याय, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, भेदभाव और लैंगिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाने में मदद करती है। अधिक विशेष रूप से, उच्च शिक्षा महिलाओं को उनके सामाजिक अधिकारों, राजनीतिक अधिकारों, आर्थिक अधिकारों और शैक्षिक अधिकारों को मूर्त रूप देने में मदद करती है। भारत के संविधान ने महिलाओं को उनके सामने आने वाले नुकसान को दूर करने के लिए अधिकारों और विशेषाधिकारों की गारंटी दी है। अनुच्छेद 14 महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। अनुच्छेद 15 धर्म, जाति, वर्ग, लिंग आदि के किसी भी आधार पर भेदभाव पर रोक लगाता है। अनुच्छेद 15 (ए) महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करता है। अनुच्छेद 15(3) राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव करने में सक्षम बनाने के लिए विशेष प्रावधान करता है। अनुच्छेद 39 (ए) आजीविका के साधनों पर समान अधिकार सुनिश्चित करता है। अनुच्छेद 39 (सी) समान काम के लिए समान वेतन का प्रावधान, अनुच्छेद 42 काम की मानवीय स्थिति और मातृत्व राहत का प्रावधान। वर्तमान समाज में महिलाओं को अभी भी कई वर्षों से लिंग भेदभाव, असमानता, घर और कार्यस्थल पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है। घर और कार्यस्थल पर उनकी भूमिकाओं और योगदान का सम्मान नहीं किया जाता है। सुझाव है कि वर्तमान समाज को उन पूर्वाग्रहों को दूर करना होगा और महिलाओं के प्रति अपनी मानसिकता में बदलाव लाना होगा और महिलाओं द्वारा किए गए योगदान को पहचानना होगा और उन्हें मूल्यवान और पुरुषों के बराबर मानना होगा। महिलाओं को भी समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान देने का समान अवसर दिया जाना चाहिए। उनके योगदान को पहचाना और सराहा जाना चाहिए। उच्च शिक्षा महिलाओं को सामाजिक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

मान्यता प्राप्त करने में मदद करती है, जो उन्हें उनकी अवांछनीय और प्रतिकूल वर्तमान स्थिति से अवगत कराती है (शौकत और पेल, 2015)। उच्च शिक्षा महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गई है जो वर्तमान दुनिया की समस्याओं से निपटने की उनकी क्षमता को बढ़ाती है। ऐतिहासिक रूप से, वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति ऐसी थी कि वे अपनी सामाजिक स्थिति का आनंद लेती थीं और पुरुषों के समान ही शिक्षा प्राप्त करती थीं। लेकिन, समय के साथ महिलाओं के प्रति लोगों का नजरिया भी बदला, जिससे उनके लिए शिक्षा हासिल करना मुश्किल हो गया। महिलाओं की शिक्षा सदियों से उपेक्षित है और वर्तमान समाज में भी इसकी आवश्यकता को नजरअंदाज किया जाता है। 21वीं सदी में उच्च शिक्षा को समाज के सामाजिक और आर्थिक विकास के एक शक्तिशाली साधन के रूप में मान्यता दी गई है, यह समाज में वंचित वर्गों, विशेषकर महिलाओं के उन्नयन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (डे एंड हलदर, 2014)। अब देश को महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। प्रत्येक भारतीय महिला का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं की उच्च शिक्षा स्वयं महिलाओं को ही नही बल्कि पूरे समाज को बेहतर तरीके से विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका है।

वैश्विक दृष्टिकोण– दुनिया भर की सरकारों (उनमें से अधिकांश) ने माना है कि वे महिलाओं को शामिल किए बिना अपने राष्ट्रों की पूर्ण वृद्धि और विकास हासिल करने में सक्षम नहीं होंगे, जो उनकी आबादी का 50 प्रतिशत हैं (यूएन महिला, 2011)। साथ ही, महिलाओं के अधिकारों और मानवाधिकारों के बीच सीधा संबंध रहा है विभिन्न वैश्विक मंचों पर इस पर जोर दिया गया और सुझाव दिये गये। इस कड़ी को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं और आवश्यक नीतियां बनाएं। हम एक बार सहमत हों और समझें कि लैंगिक भेदभाव मौजूद है और लैंगिक समानता होनी चाहिए। महिला सशक्तिकरण इस संबंध में उठाया जाने वाला एक स्वाभाविक कदम है।

भारतीय दृष्टिकोण– भारत का लिंग अनुपात 943 (प्रति 1000 पुरुषों पर 943 महिलाएँ) है। राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर 65. 46 प्रतिशत है जो राष्ट्रीय पुरुष साक्षरता दर से 16.68 प्रतिशत कम है। भारत में मुख्य श्रमिक के रूप में महिलाएँ 14.7 प्रतिशत (45. 1 प्रतिशत पुरुष) हैं और 11 प्रतिशत (6.6 प्रतिशत पुरुष) सीमांत श्रमिक के रूप में। ये आँकड़े स्वयं महिलाएँ सशक्तिकरण की आवश्यकता की स्थिति को दर्शाते हैं। इसके अलावा, कई शोध और अध्ययनों में भी पाया गया हैं। भारत में अभी भी महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया असंतुलित रही है, विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों की महिलाओं के केवल एक छोटे से प्रतिशत को सुविधा प्रदान करना समाज के लिए उदहारण नही हो सकता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा– नारीवादी समाजशास्त्रः अन्य विषयों के विपरीत, समाजशास्त्र को महिलाओं के लिए अ.श्यता मुद्दे का सामना नहीं करना पड़ा परिवार की पढ़ाई के कारण ही ये दिखाई दिए हैं। हालाँकि विवाह और रिश्तेदारी, उनके अनुभवों को नजरअंदाज कर दिया गया है। नारीवादी समाजशास्त्र महिलाओं के इन अनुभवों को आगे लाने और उनकी आवाज को बढ़ाने का कार्य किया है।

साहित्य समीक्षाः उच्च शिक्षा में महिला छात्रा– बतूल, साजिद व शाहीन (2013) ने पाकिस्तान में लिंग और उच्च शिक्षा पर एक अध्ययन किया, वर्ष 2001 से 2003 तक पुरुष और महिला के नामांकन के रुझान का अध्ययन करने के लिए माध्यमिक डेटा एकत्र किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि पिछले कुछ वर्षों में बी.ए. डिग्री में महिला छात्रों की तुलना में पुरुष छात्रों की तुलना में वृद्धि हो रही थी और मास्टर डिग्री में भी महिला छात्रों का नामांकन वर्ष 2001–2002 से बढ़ा है, जहाँ पुरुष नामांकन में कमी आई है, लेकिन वर्ष 2003 में नामांकन की दर बढ़ी वर्ष 2001 से महिलाओं की संख्या में कमी आई है। यह भी पाया गया कि 23 एम.फिल और पी.एचडी स्तर पर महिलाओं की नामांकन दर बढ़ रही है जहां पुरुषों की नामांकन दर कम हो रही है।

ओगन (2009) ने पहली पीढ़ी के कॉलेज के छात्रों के बीच उच्च शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक अध्ययन किया, जहां यह पाया गया कि पहली पीढ़ी के छात्रों और कॉलेज–शिक्षित छात्रों की धारणाओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। साथियों के प्रभाव, माध्यमिक विद्यालय से सहायता, कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के लिए वित्तीय सहायता तक पहुंच, कॉलेज की तैयारी के संबंध ा में प्रथम वर्ष के परिवार। 39 परिवार के प्रभाव और कॉलेज की तैयारी के कारकों के आधार पर अध्ययन से पता चला कि कॉलेज में शिक्षित परिवारों के छात्रों की संख्या प्रथम वर्ष की पहली पीढ़ी के कॉलेज के छात्रों की तुलना में काफी अधिक थी।

तियोवकुल एट अल.(2015) ने माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों की खोज पर एक अध ययन पाकिस्तान के करक जिले में किया गया। अध्ययन में उन कारकों का पता चला जो माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करते हैं। अध्ययन से अन्य कारकों का पता चला जो स्कूल में बुनियादी शैक्षणिक सुविधाओं की कमी के कारण लड़कियों की शिक्षा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं– कक्षा में अपर्याप्त डेस्क और कुर्सियों जैसी बुनियादी सुविधाएं, शिक्षकों के लिए फर्नीचर की कमी, कंप्यूटर प्रयोगशाला की कमी, शौचालय की सुविधा, परिवहन सुविधाओं की कमी और पुस्तकालय में पुस्तकों की कमी।

सिद्दीका और सलीम (2017) ने उच्च शिक्षा के छात्रों के सामने आने वाली समस्याओं पर एक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले 70.4% छात्रों को लोड शेडिंग के कारण आईसीटी का उपयोग करने में समस्याओं का सामना करना पड़ा। अध्ययन में पाया गया कि विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को कंप्यूटर की धीमी गति, इंटरनेट में सिग्नल की समस्या, वायरस का खतरा, कंप्यूटर की खराब कार्यशील स्थिति, इंटरनेट पहुंच की कमी और तकनीकी सहायता की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसलिए यूनिवर्सिटी में 83.6ः छात्रों को कंप्यूटर की धीमी गति के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा।

चौधरी (1988) ने अपने काम ''युवा महिलाओं में बदलते मूल्य'' में उच्च शिक्षा में नामांकित महिलाओं के बदलते मूल्यों का अध ययन किया। उदाहरण के लिए सामाजिक–सांस्.तिक संस्थाएँ परिवार, विवाह, शिक्षा, रोजगार और उनके महिलाओं को प्रदत्त विभिन्न अधिकारों के बारे में कानूनी जागरूकता। उनके विश्लेषण के अनुसार, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है . व्यक्तिगत, सामाजिक. यह पाया गया कि छात्राएं मुख्य रूप से रोजगार प्राप्ति, पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि, ज्ञान

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

में या अच्छे पति की तलाश जैसे व्यक्तिगत हितों के लिए उच्च शिक्षा चाहती हैं। उनका यह भी मानना था कि उच्च शिक्षा ने महिलाओं ने वैवाहिक समायोजन को बढ़ावा दिया।

जयराम (1990) ने पाया कि उच्च शिक्षा में उन परिवारों छात्र बड़े पैमाने पर आकर्षित होते हैं, खासकर शहरी इलाकों से जिन परिवारों की उच्च शैक्षिक, व्यावसायिक और आय पृष्ठभूमि बेहतर होती है, पुरुषों की तुलना महिलाओं को नुकसान में पाया जाता है शिक्षा समानता पैदा करने के साधन के रूप में काम करने में विफल रही है. प्राथमिक स्तर से ही अवसर सामाजिक आर्थिक और सांःतिक कारकों के संचालन से आकार लेते हैं। उन्होंने तर्क दिया है कि उच्च शिक्षा 'यथास्थिति बनाए रखने' में सहायक सिद्ध हुई है। हालांकि वंचित तबके को सुरक्षात्मक भेदभाव की नीति से फायदा हुआ है।

खगुया (2014) ने तकनीकी पाठ्यक्रमों में महिला छात्रों के नामांकन को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक अध्ययन केन्या के तकनीकी प्रशिक्षण संस्थान किया पाया कि लड़कियों को अपने शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए घर पर बहुत कम समय मिलता है क्योंकि उन्हें घरेलू गतिविधियाँ निष्पादित करने में अधिक समय बिताना पड़ता है।

इरुम, भट्टी व मुंशी, (2015) ने सिंध, पाकिस्तान में उच्च शिक्षा संस्थान में महिलाओं के सामने आने वाली समस्या पर एक अध्ययन किया। अध्ययन से पता चलता है कि 60: महिला छात्रों को अपने पुरुष समकक्षों के साथ समान स्थिति का आनंद लेने का समान अवसर नहीं मिलता है, और उन्हें उच्च शिक्षा में सकारात्मक भूमिका निभाने की भी अनुमति नहीं है। इसके अलावा, 66 प्रतिशत महिला शिक्षकों ने खुलासा किया है कि महिलाओं को उच्च शिक्षण संस्थानों में रोजगार के बहुत कम अवसर दिए गए। 67 प्रतिशत महिला छात्रों को चयन की स्वतंत्रता नहीं है, 73 प्रतिशत महिला छात्रों को नेतृत्व की स्थिति संभालने की जिम्मेदारी नहीं दी गई, 60 प्रतिशत महिला छात्र उच्च 51 शिक्षा संस्थानों में असुरक्षित महसूस करती हैं, इसके अलावा, 52 प्रतिशत महिला छात्र इस बात से सहमत हैं कि उच्च शिक्षा ने महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने और सुधारने में महिला विद्यार्थियों की मदद की।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. महिला छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त हेतु प्रेरित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में महिला छात्रों के समक्ष आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोध पद्धति एवं अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति वर्णात्मक एव अन्वेषणात्मक है। इस शोध प्रारूप के द्वारा विषय तथा समस्या के विभिन्न पहलुओ पर विस्तारपूर्वक कार्य किया गया है। इस शोध कार्य हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक, परा–स्नातक व पीएचडी के 100 छात्राओं को उद्देश्यपर्ण निदर्शन प्रणाली से लिया गया है। आकडें एकत्र करने के लिए ऑनलाइन गूगल फॉर्म का निर्माण किया गया था जिसे उद्देश्यपर्ण रूप से लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रम मे नामांकित छात्र–छात्राओं को ऑनलाइन माध्यम सें भेजा गया। कुल 100 छात्राओं ने उत्तर दिया, छात्राओं जिसका अध्ययन व विश्लेषण करके निष्कर्ष तक पहुंचा गया।

लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्राओं की स्थिति का विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन हेतु लखनऊ विश्वविद्यालय की 100 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है जिसमें उनके पाठ्यक्रम व सामाजिक स्थिति का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है।

पाठ्यक्रम का विवरण
(ग्राफ संख्या–1)

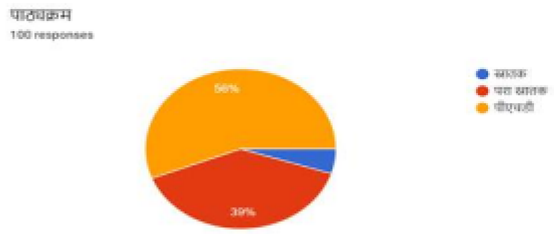

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि मात्र 5 प्रतिशत छात्राएं स्नातक, 36 प्रतिशत छात्राएं परा–स्नातक तथा सर्वाधिक 56 प्रतिशत छात्राएं पी एच डी पाठ्यक्रम की इस अध्ययन में सम्मिलित हैं.

जाति संबंधी विवरण
(ग्राफ संख्या–2)

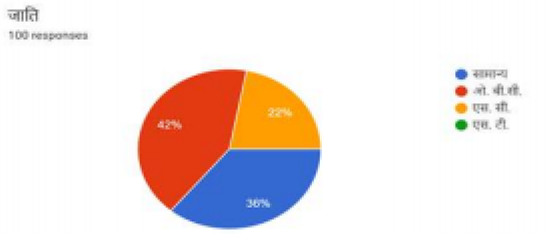

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति की 36 प्रतिशत छात्राएं, 42 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा 22 प्रतिशत अनुसूचित जाति की छात्राएं सम्मिलित हैं तथा अनुसूचित जनजाति की कोई भी छात्रा इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं है।

छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित करने वाले कारकों का विश्लेषण– शिक्षा खासकर उच्च शिक्षा किसी भी देश के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है. जब हम रिसर्च एंड डेवलपमेंट की बात करते हैं तो हम पूर्ण रूप से उच्च शिक्षा पर केंद्रित हो जाते हैं क्योंकि उच्च शिक्षा के द्वारा ही शोध को बढ़ावा दिया जाता है. इस कारण यह ज्ञात होना बहुत आवश्यक है कि वह कौन से कारक हैं जो उच्च शिक्षा को प्रेरित करते हैं।

उच्च शिक्षा को प्रेरित करने वाले कारक
(ग्राफ संख्या–3)

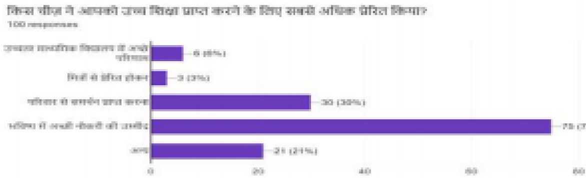

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में छात्राओं के अच्छे अंक 6 प्रतिशत छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया है, मित्रों के द्वारा मात्र 3 प्रतिशत छात्राएं ही प्रेरित पाई गई है, परिवार के सहयोग अर्थात समर्थन से 30 प्रतिशत छात्राओं को प्रेरित किया है, भविष्य में अच्छी नौकरी मिलेगी इस उम्मीद में सर्वाधिक 75 प्रतिशत छात्राओं को प्रेरित किया है तथा 21 प्रतिशत छात्राएं ऐसे सम्मिलित हैं जिनके उच्च शिक्षा हेतु प्रेरणा के अन्य स्रोत हैं।

उच्च शिक्षा का महत्व
(ग्राफ संख्या–4)

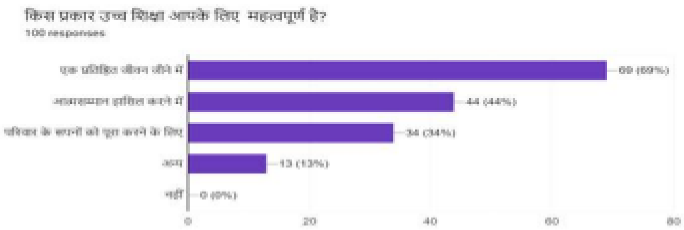

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 69 प्रतिशत छात्राओं ने यह माना कि उच्च शिक्षा हमें प्रतिष्ठित जीवन यापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, 44 प्रतिशत छात्राएं यह मानती हैं कि उच्च शिक्षा से उन्हें परिवार पड़ोस संबंधियों में सम्मान मिलता है, 34 प्रतिशत छात्राएं यह मानती हैं कि उन्हें परिवार को आगे बढ़ने व परिवार के प्रगति में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जबकि 30 प्रतिशत छात्राएं यह मानती हैं कि उच्च शिक्षा के अन्य भी महत्व हैं।

छात्राओं के समक्ष उत्पन्न समस्याओं व चुनौतियों का विश्लेषण– प्रस्तुत अध्ययन में लखनऊ विश्वविद्यालय की अध्यनरत छात्राओं की समस्याओं एवं चुनौतियां का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है अध्ययन के दौरान एक सकारात्मक तथ्य सामने आया है कि छात्राओं के समक्ष समस्याओं का ग्राफ गिरा है।

चुनौतियों की प्रकृति
(ग्राफ संख्या–5)

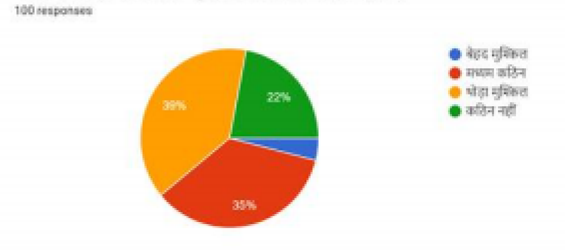

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि मात्र 4 प्रतिशत छात्राओं को बेहद मुश्किल चुनौतियों का सामना करना पड़ा, 34 प्रतिशत छात्राओं को मध्य कठिन चुनौती का सामना करना पड़ा, 39 प्रतिशत छात्राओं को थोड़ा बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ा तथा 22 प्रतिशत छात्राओं को किसी प्रकार की चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ा।

चुनौतिओं का विवरण
(ग्राफ संख्या–6)

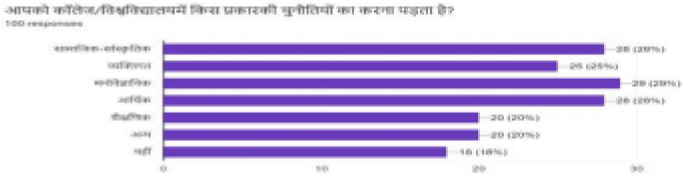

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 28 प्रतिशत छात्राओं को सामाजिक सांस्.तिक, 25 प्रतिशत छात्राओं को व्यक्तिगत, 29 प्रतिशत छात्राओं को मनोवैज्ञानिक, 28 प्रतिशत छात्राओं को आर्थिक, 20 प्रतिशत छात्राओं को शैक्षणिक, 20 प्रतिशत छात्राओं को इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जबकि अच्छी बात यह है कि 18 प्रतिशत छात्राओं को कोई किसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है।

चुनौतियों का प्रकार
(ग्राफ संख्या–7)

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 19 प्रतिशत छात्राओं को संचार अथवा एक दूसरे से अंतक्रिया करने में कठिनाई, 28 प्रतिशत छात्राओं को आर्थिक कठिनाई, 15 प्रतिशत छात्राओं को जाति के आधार पर भेदभाव, 12 प्रतिशत छात्राओं को लिंग संबंधी समस्या, 4 प्रतिशत छात्राओं को धर्म के आधार पर भेदभाव, 37 प्रतिशत छात्राएं उसके अतिरिक्त अन्य समस्याओं एवं चुनौतियां का सामना करती हैं जबकि 18 प्रतिशत छात्राओं को किसी प्रकार की कोई समस्या या चुनौती का सामान नहीं करना पड़ता है।

छात्राओं के उत्पीड़न का विवरण
(ग्राफ संख्या–8)

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 32 प्रतिशत छात्राएं मानसिक उत्पीड़न, 4 प्रतिशत छात्राएं यौन उत्पीडन, 3 प्रतिशत छात्राएं शारीरिक उत्पीड़न, 13 प्रतिशत छात्राएं मौखिक उत्पीड़न, 8 प्रतिशत छात्राएं आर्थिक उत्पीड़न तथा 6 प्रतिशत छात्राएं अन्य प्रकार के उत्पीड़न की शिकार पाई गई हैं जबकि 53 प्रतिशत छात्राएं उत्पीड़न मुक्त हैं।

छात्राओं के समक्ष सामुदायिक चुनौती
(ग्राफ संख्या–9)

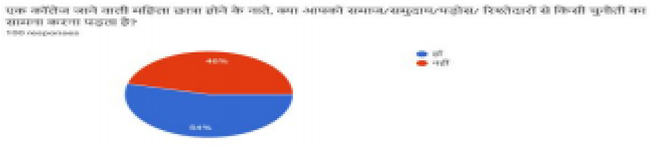

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 54 प्रतिशत छात्राओं को मात्र महिला होने के नाते समाज, समुदाय, पड़ोस तथा संबंधियों के अनुचित टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि वह शिक्षा के लिए घर से बाहर निकलती है।

विवाह सम्बन्धी दबाव
(ग्राफ संख्या–10)

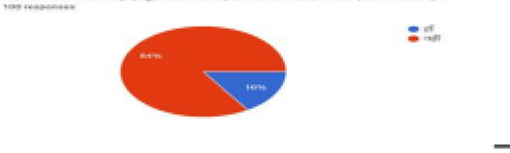

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

उपर्युक्त ग्राफ से स्पष्ट होता है, कि 16 प्रतिशत छात्राओं को अपने करियर बनाने के साथ–साथ परिवार के द्वारा विवाह करने का दबाव भी झेलना पड़ता है जो उनको अतिरिक्त दबाव युक्त बनता है।

इन चुनौतियां एवं समस्याओं के अतिरिक्त कुछ अन्य समस्याएं चिन्हित की गई है। अस्वच्छ परिसर, अस्वच्छ शिक्षण–कक्ष, अव्यवस्थित कैंटीन, आर्थिक समस्याएं, विश्वविद्यालय की दूरी की समस्या, भाषा की चुनौती, विभागों का डिजिटलीकरण न होना एक प्रमुख समस्या के रूप में पाई गई है।

निष्कर्ष– अध्ययन से पता चलता है कि यह दोनों स्थिति विश्वविद्यालय में विद्यमान हैं। शोध छात्राओं के लिए विश्वविद्यालय शोध मेधा नामक छात्रवृत्ति को छात्राओं को प्रदान करता है जोकि कम छात्राओं को तथा बहुत कम राशि प्रदान करता है जो पर्याप्त नहीं है। किसी भी देश में महिलाओं की लगभग आधी संख्या होती है। महिलाओं को बिना मुख्य धारा में सम्मिलित किए देश के विकास की गति तीव्र नहीं की जा सकती है। इससे स्पष्ट होता है, कि महिला शिक्षा व विकास में प्रत्यक्ष व सकारात्मक संबंध है। इसलिए महिला शिक्षा को प्रेरित करने वाले कारकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा छात्राओं के विभिन्न प्रकार की चुनौतियों को कम किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chaudhary, Pratima K.1988. Changing Values among Young Women. Delhi: Amar Prakashan.
2. Jayaram, N. 1990. Education, Inequality and Social Change. In Sociology of Education in India (pp.117- 131). Jaipur: Rawat Publications.
3. Acharya, D. R., Bell, J. S., Simkhada, P., Teijlingen, E. R. V, & Regmi, P. R. (2010). Women's autonomy in household decision making: A demographic study in Nepal. Reproductive Health, 7(15). doi: 10.1186/1742- 4755-7-15.
4. Shabreen, S. (2015). Higher education and social change: A study of Muslim women in urban, Mysore 1947- 2000. (Unpublished doctoral thesis). University of Mysore. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/91279.
5. Dey, D., & Halder, T. (2014). Present status of women in higher education in West Bengal: An Appraisal. International Journal of Humanities and Social Science Studies, 1(3), 166-172. Retrieved from https:// www.ijhsss.com/ files/DoliDey.pdf.
6. Sharma, S. R. (1995). Women and Education (Vol. 2). New Delhi: Discovery Publishing House.
7. Shaukat, S., & Pell, A.W. (2015). Personal and social problem faced by women in higher education. FWUJournal of Social Studies, 9(2), 101-109. Retrieved from http://www.sbbwu.edu.pk>journal>11.
8. Batool, S. Q., Sajid, M. A., & Shaheen, I. (2013). Gender and higher education in Pakistan. International Journal of Gender and Women's Studies 1(1), 15-28. Retrieved from http://ijgws.com/journals/ijgws/Vol_1_No_1_June_2013/ 2.pdf.
9. Ogan. L. C. (2009). Perceived factors influencing the pursuit of higher education among first-generation college students. (Doctoral Dissertation, Liberty University). Retrieved from https://core.ac.uk/download/pdf/ 58825122.pdf.
10. Siddiquah, A., & Salim, Z. (2017). The ICT facilities, skills, usage, and the problems faced by the students of higher education. EURASIA Journal of Mathematics Science and Technology Education, 13(8), 4987-4994.doi: 10.12973/eurasia.2017.00977.
11. Khaguya, L. (2014). Factors influencing female students enrolment in technical courses: A case of Matili technical training institute, Kenya. (Master dissertation, University of Nairobi). Retrieved from https://www.voced.edu.au/con tent/ngv%3A67195.
12. Irum, S., Bhatti, T., & Munshi, P. (2015). Study on problem faced by women in higher education institution in Sindh, Pakistan. The Sindh University Journal of Education, 44 (1), 173-191. Retrieved from https://citeseerx.ist.psu.edu/ viewdoc/download?doi=10.1.1.1032.5236&rep=re p1&type=pdf.
13. http://www.dataforall.org/dashboard/censusinfoindia_pca/
14. United Nations - Wikipedia
15. रावत, हरिकृष्ण. (2021), सामाजिक शोध की विधिया, जयपुर: रावत पब्लिकेशन।

*****